"छल"

• मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ साद । भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बाद । जादे बिलम न होवई विण नावै बिसमाद ।1।

अर्थः- जीव दुनिया के पदार्थों को स्वाददार समझ के इस्तेमाल करता है । पर, इन भोगों का स्वाद अंत में कड़वा दुखदाई साबित होता है विकार और रोग पैदा हो जाते हैं । मनुष्य जगत में भाई - मित्र - दोस्त आदि बनाता है और यह माया का झगड़ा खड़ा किये रखता है । पर आश्चर्य

की बात यह है कि परमात्मा के नाम के बिना किसी भी चीज के नाश होने में समय नहीं लगता ।

- जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति । किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ।2।

अर्थः- जैसे रात के समय किसी के घर आए हुए मेहमान दिन चढ़ने पे वहां से उठ के चल पड़ेंगे । उसी तरह, हे जीव ! जिंदगी की रात खत्म होने पर तू भी इस जगत से चल पड़ेगा । तू इस गृहस्थ से बाग परिवार से क्यूँ मस्त हुआ पड़ा है ? यह सारी फूलों की बगीची के समान है ।

मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि । सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ।3।

अर्थः- यह चीज मेरी है, यह जायदाद मेरी है, क्यूं ऐसा गुमान कर रहा है ? जिस परमात्मा ने यह सभ कुछ दिया है, उसको ढूंढ । यहां से जरूर कूच कर जाना है । लाखों करोड़ों का मालिक भी लाखों करोड़ों रूपए छोड़ के चला जाएगा ।

- लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनम पाइओइ । नानक नाम समालि तूं सो दिन नेड़ा आइओइ ।4।

अर्थः- हे भाई ! चौरासी लाख जूनियों में भटक भटक के अब ये मानव जन्म बड़ी मुश्किल से मिला है । हे नानक ! परमात्मा का नाम हृदय में बसा, वह दिन नजदीक आ रहा है जब यहां से कूच करना है ।

- मेरे मन सतगुर की सेवा लाग । जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआग ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! गुरु की बताई हुई सेवा में व्यस्त रह । हे भाई ! अपने मन के पीछे चलना छोड़ दे और दुनिया के पदार्थों का मोह त्याग, क्योंकि जो कुछ दिख रहा है सभ नाशवान है ।

जिउ कूकर हरकाइआ धावे दह दिस जाई । लोभी जंत न जाणई भख अभख सभ खाई । काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाई ।2।

अर्थः- जैसे हलकाया कुत्ता दौड़ता है और हर तरफ को दौड़ता है । उसी तरह लोभी जीव को भी कुछ नहीं सूझता, अच्छी - बुरी हरेक चीज खा लेता है । काम के और क्रोध के नशे में फंसा हुआ मनुष्य मुड़ - मुड़ योनियों में पड़ता रहता है ।

माइआ जाल पसारिआ भीतरि चोग बणाई । त्रिसना पंखी फासिआ निकस न पाए माई । जिन कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवे जाई ।3।

अर्थः- माया के विषयों का चोगा जाल में तैयार करके वह जाल बिखेरा हुआ है । माया की तृष्णा ने जीव पक्षी को उस जाल में फंसाया हुआ है । हे मेरी मां ! जीव उस जाल में से छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि जिस ईश्वर ने यह सभ कुछ पैदा किया है उस से सांझ नहीं डालता और बार - बार पैदा होता मरता रहता है ।

अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इह संसार । जिस नो रखै सो रहै समरथ पुरख अपार । हरि जन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहार ।4। (5-50)

अर्थः- इस जगत को माया के अनेक किस्म के रूपों रंगों में कई तरीकों से मोह रखा है । इस में से वही बच सकता है, जिसको सर्व समर्थ बेअंत अकाल - पुरख खुद बचाए । परमात्मा की मेहर से परमात्मा के भक्त ही परमात्मा के चरणों में तवज्जो जोड़ के बचते हैं । हे नानक ! तू सदा उस परमात्मा से सदके रह ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"